विज्ञान व्रत

यह सादगी क्या बात है
जी आपकी क्या बात है

यों कनखियों से आपने
जो बात की क्या बात है

सब आपको देखा किये
हैरानगी क्या बात है

थी तीरगी बिन आपके
अब रौशनी क्या बात है

अब हैं हमारे आप भी
तो ज़िन्दगी क्या बात है

क़ासिम बीकानेरी

हमें हाले-दिल अब सुनाना पड़ेगा
जो है दर्द दिल का बताना पड़ेगा

भुला कर सभी शिकवे,अश्कों को पीकर
'जब आएंगे वो मुस्कुराना पड़ेगा'

पता क्या था दिल जिस ने तोड़ा उसी से
इलाजे ग़मे-दिल कराना पड़ेगा

वगरना कहेंगे मुझे लोग ख़ुदबीं
बुलाया है उस ने तो जाना पड़ेगा

अगर ज़िन्दगी में ख़ुशी चाहते हो
जो रूठे हैं उनको मनाना पड़ेगा

वो इक बार फिर मेहबाँ हो रहे हैं
नया ज़ख़्म फिर दिल पे खाना पड़ेगा

ख़ुदा उसके बदले में देगा बहुत कुछ
नया खेत में जो भी दाना पड़ेगा

सुकूं ज़िन्दगी में मिलेगा इसी से
हमें ख़्वाहिशों को सुलाना पड़ेगा

किया जो नहीं हो जहां में किसी ने
वही काम करके दिखाना पड़ेगा

मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत, मुहब्बत
सबक़ ये सभी को सिखाना पड़ेगा

चली जाए बदले में जां भी तो 'क़ासिम'
ये एहदे-वफ़ा है, निभाना पड़ेगा

ISSN:2583-8849